International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.22 May-June 2023

झुग्गी बस्तियों में शौचालयों की स्थिति का अध्ययन : भोपाल नगर के संदर्भ में

नमिता सेन[1], प्रो. विजय कुमार सिंह[2]
[1]शोधार्थी,
क्षेत्रीय नियोजन एवं आर्थिक विकास विभाग बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल
[2]ओएसडी खनन एवं श्रम विभाग मंत्रालय बल्लभ भवन भोपाल मध्य प्रदेश
Corresponding Author- नमिता सेन
Email- namitasen11@gmail.com

शोध सार:-
विश्व के किसी भी देश के किसी क्षेत्र में अमीर, गरीब या झुग्गी वासी प्रत्येक व्यक्ति नित्य क्रियाएं करता ही है। जैसे- सोना, उठना, भोजन करना और शौच करना आदि। अधिकतर झुग्गी बस्तियों में अभी भी शौचालयों का अभाव है या फिर शौचालयों की स्थिति बहुत ही खराब है। जिस प्रकार गन्दी नालियों को जल के द्वारा साफ किया जाता है उसी प्रकार से शरीर की गंदगी को शौच क्रिया द्वारा साफ किया जाता है। शौच क्रिया करने के लिए शौचालय की आवश्यकता होती है। अतः प्रत्येक घर में शौचालय की व्यवस्था अति आवश्यक होती है, परंतु झुग्गी बस्तियों में ऐसा नहीं है। यहां के अधिकतर निवासी शौच क्रिया के लिए सामुदायिक शौचालयों, सुलभ शौचालयों और खुले में आदि का उपयोग करते हैं। झुग्गी बस्तियों के निवासियों की जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे ही वे जीवन की मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगते हैं। आय और शौचालयों की स्थिति के प्रकार में घनिष्ट संबंध है। यदि आय कम होगी तो शौचालयों की स्थिति बहुत ही निम्न स्तर की देखने को मिलेगी। इन बस्तियों में ज्यादातर परिवारों की न्यूनतम से भी कम आय हैं। प्रस्तुत अध्ययन भोपाल नगर के 5 जोन की 5 झुग्गी बस्तियाँ के 142 परिवारों पर आधारित है।

मुख्य शब्द :- झुग्गी बस्ती, शौचालय, सामुदायिक, सुलभ।

प्रस्तावना :-

वर्तमान समय में विश्व की जनसंख्या द्रुत गति से बढ़ रही है। 2025 तक विश्व की जनसंख्या 8 अरब होने का अनुमान लगाया गया है। जोकि 2022 में ही हो चुकी है। विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या वाले देशों में भारत दूसरे स्थान पर है। और शायद बहुत ही जल्द प्रथम स्थान पर हो जायेगा। विश्व में बहुत ही तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि ही बस नहीं हुई है, बल्कि नगरीकरण भी बहुत ही तीव्रता से हुआ है। विकासशील देशों में अधिक जनसंख्या मुख्य समस्या है और उसके पश्चात गरीबी दूसरी समस्या है। उक्त कारणों के साथ ही गांवों में रोजगार के साधन नहीं होने के कारण लोग गांवों से नगरों की ओर पलायन करके बहुत संख्या में आ रहे हैं। यह सोचकर की नगरों में रोजगार मिल जाएगा और जीवन स्तर बेहतर हो जाएगा, परन्तु नगर में आने पर सच्चाई से अवगत होते हैं कि दूर के ढोल ही सुहावने होते हैं। नगरों में महंगाई अधिक होने के कारण मूलभूत आवश्यकताएं रोटी कपड़ा और मकान की पूर्ति करना ही बहुत कठिन कार्य है। नगरों में आए हुए लोग रोटी और कपड़े की व्यवस्था तो कर लेते हैं, लेकिन मकान बनाना नामुमकिन हो जाता है। अतः ये लोग झुग्गी बस्तियों का निर्माण करके उनमें वास करने लगते हैं। आज वर्तमान में नगरों की झुग्गी बस्तियां एक मुख्य समस्या बनकर उभर रही हैं। इन झुग्गी बस्तियों का विस्तार बढ़ता ही जा रहा है।

झुग्गी बस्तियां वे बस्तियां होती हैं, जहां पर रहना नारकीय जैसा महसूस करना होता है। इनमें गंदगी देखने को मिलती है, कच्चे छोटे छोटे कमरे और एक कमरे में 5-7 लोग एक साथ रहते हैं। जल, बिजली, साफ सफाई और शौचालय का अभाव होता है। इन बस्तियों में रहने वाले लोग शौचालय का अभाव में निवासी शौच क्रिया के लिए सामुदायिक शौचालयों, सुलभ शौचालयों और खुले में आदि का उपयोग करते हैं। 2011 के अनुसार भारत की जनसंख्या लगभग 121 करोड़ थी, जिसमें से 6,54, 94,604 जनसंख्या झुग्गी बस्तियों में निवास करती है। ऊर्जा की आवश्यकता आवश्यक है। जिस प्रकार गन्दी नालियों को जल के द्वारा साफ किया जाता है उसी प्रकार से शरीर की गंदगी को शौच क्रिया द्वारा साफ किया जाता है। यह अनुमान लगाया गया है कि 2030 में दो अरब झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले लोग होंगे। उच्च घनत्व वाली मलिन बस्तियों में स्वच्छता से संबंधित मुद्दे विशेष रूप से हानिकारक हैं (Tomlinson, 2015)।

शौचालय एक ऐसी सुविधा है जो मानव के मल एवं मूत्र के समुचित व्यवस्था के लिये प्रयोग किया जाता

है। शौचालय शब्द का प्रयोग उस कक्ष के लिये किया जा सकता है जिसमें मल-मूत्र विसर्जन कराने वाली युक्ति लगी होती है; या यह उस युक्ति के लिये भी प्रयुक्त होता है।

इसके लिए शौचालय कई प्रकार के होते है। किस प्रकार के शौचालय का कौन इस्तेमाल कर सकता है इसके कई तत्व हैं जैसे आय का स्तर, शिक्षा का स्तर और सामाजिक स्तर आदि का प्रभाव पड़ता है। झुग्गीवासियों की आय निम्न स्तर की ही होती है। इनके पास तो दो बार भोजन तक की व्यवस्था करने के लिए भी पैसे नहीं होते हैं। अतः इनके लिए शौचालय की उपलब्धता किसी सपने की तरह ही है। अधिकतर झुग्गी वासी शौचालय के अभाव में ही जीवनयापन कर रहे हैं। वर्तमान समय में अधिकतर लोगों द्वारा सेप्टिक टैंक वाला शौचालय का उपयोग किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 2 अक्तूबर, 2014 को स्वच्छ भारत मिशन को महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती पर श्रद्धांजलि के रूप में 2 अक्तूबर, 2019 तक 'खुले में शौचमुक्त भारत' का लक्ष्य प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया था। सरकार द्वारा Free Toilet Yojana के अंतर्गत ₹10000 की अनुदान राशि प्रदान की जाती थी। जिसके माध्यम से शौचालय का निर्माण किया जाता था। अब इस राशि को बढ़ाकर ₹12000 कर दिया गया है। यह योजना देश के नागरिकों को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने में कारगर साबित होगी। प्रस्तुत शोध पत्र भोपाल नगर के संदर्भ में झुग्गी बस्तियों में शौचालयों की स्थिति का अध्ययन है।

2011 के अनुसार भोपाल की जनसंख्या लगभग 17,98,218 कुल जनसंख्या जिसमें से 4,91,860 जनसंख्या झुग्गी बस्तियों में निवास करती है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल है, जोकि बहुत बड़ा शहर भी है और यहाँ पर अनगिनत रोजगार भी उपलब्ध हैं। अतः भोपाल में आसपास के गांवों से लोग रोजगार की तलाश में आते हैं और कोई ना कोई रोजगार मिल भी जाता है परंतु रहने के लिए घर या मकान नहीं मिल पाता है। इसलिए मजबूरीवश पलायन कर के आए हुए लोग यहां झुग्गी बस्तियों का निर्माण करते हैं। ये झुग्गी बस्तियां गंदगी से युक्त क्षेत्र होते है। ज्यादातर इनमे शौचालयों का अभाव देखने को मिलता है। या फिर बहुत ही बुरी हालत में होते है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बहुत लोगों के लिए शौचालयों का निर्माण संभव हो पाया है, परन्तु आज भी कई लोगों के पास यह सुविधा उपलब्ध नही हो पायी है।

अध्ययन क्षेत्र :-

मध्य प्रदेश भारत का हृदय स्थल कहलाता है जिसकी राजधानी भोपाल हैं भोपाल में ही राज्य के प्रशासनिक मुख्यालय है भोपाल का भौगोलिक विस्तार 237 - 23°54' उत्तरी अक्षांश तक तथा 77°12'-77:40' पूर्वी देशांतर तक के मध्य स्थित है। इसकी समुद्र तल से अधिकतम ऊंचाई 495.76 मीटर है और न्यूनतम ऊंचाई 180 मीटर है। औसत वार्षिक वर्षा 992mm है। अतः यहां पर उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु पाई जाती है। भोपाल नगर का कुल क्षेत्रफल 2859 वर्ग किलोमीटर है। 2011 के अनुसार भोपाल की जनसंख्या लगभग 17,98,218 कुल जनसंख्या जिसमें से 4,91,860 जनसंख्या झुग्गी बस्तियों में निवास करती है।

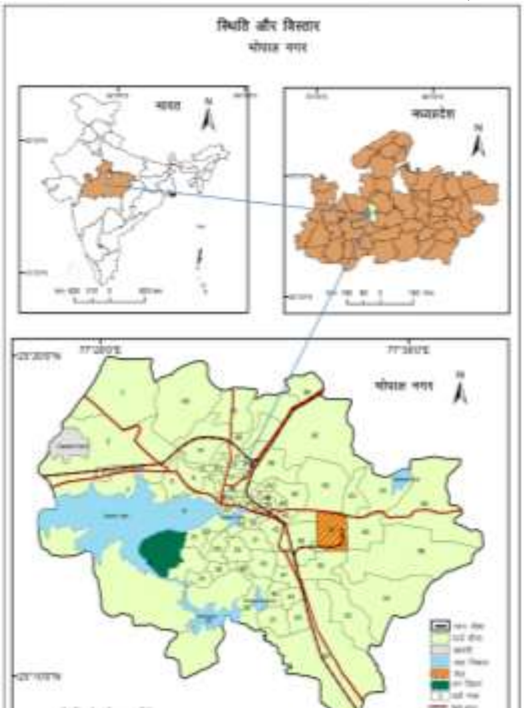

उद्देश्य :-

1) झुग्गी बस्तियों में शौचालयों की स्थिति का अध्ययन करना।
2) झुग्गी बस्तियों में आय और शौचालयों की स्थिति के बीच संबंध ज्ञात करना।
3) शिक्षा और शौचालयों की स्थिति के बीच संबंध ज्ञात करना।

अध्ययन प्राविधि :-

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक आकड़ों का उपयोग किया गया है। द्वितीयक आंकडे जनगणना 2011 मध्य प्रदेश जनगणना 2011 गजेटियर रजिस्टर, नगर निगम, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, लेख, शोध पत्र, शोध सारांश और किताबों आदि से एकत्रित किए गए है। प्राथमिक आंकड़ों को अनुसूची के द्वारा प्राप्त किया गया है। इसमें भोपाल नगर के 5 जोन की 5 झुग्गी बस्तियाँ के 142 परिवारों को लिया गया है। मानचित्र और ग्राफ का भी प्रयोग किया गया है।

भोपाल की झुग्गी बस्तियों में शौचालयों की स्थिति :-

झुग्गी बस्तियों में अधिकतर रोजगार की तलाश में आए हुए ही रहते हैं जिनकी शिक्षा निम्नतम होती है और यह लोग समाज में कुछ ज्यादा अहमियत भी नहीं रखते हैं इनका जीवन स्तर भी अति निम्न स्तर का होता है। झुग्गी बस्तियां वे बस्तियां होती है, जहां हर तरफ गंदगी, मच्छर मक्खियों की भरमार, रोशनदान का अभाव, आस्वास्थ्यकर स्थिति में, एक साथ छोटे से घर में 5 -7 लोग निवास करते हैं, घरों की स्थिति बहुत ही जर्जर होती है। कच्चे घरों में रहना बारिश के दिनों में बहुत ही मुश्किल होता है। और इन में जब शौचालय का अभाव हो तब तो और भी अधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। अतः निम्न तालिका में जोन अनुसार प्रतिदर्श परिवारों के पास अलग से शौचालय की व्यवस्था है या नहीं। इसका अध्ययन किया गया है।

जोन अनुसार प्रतिदर्श परिवार में शौचालय व्यवस्था का विवरण

जोन नम्बर	शौचालय व्यवस्था				कुल योग
	हाँ		नहीं		
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1	37	90.2	4	9.8	41
2	17	56.7	13	43.3	30
3	11	40.7	16	59.3	27
4	9	69.2	4	30.8	13
5	23	74.2	8	25.8	31
कुल योग	97	68.3	45	31.7	142(100%)
स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित 2022					

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं के पास अलग से शौचालय की व्यवस्था है। जिनका कुल जनसंख्या का 68.3% है। जबकि जोन नंबर 1 में सर्वाधिक 90.2% के पास शौचालय की व्यवस्था है, और सबसे कम मात्र 40.7% जोन नंबर 3 में है।

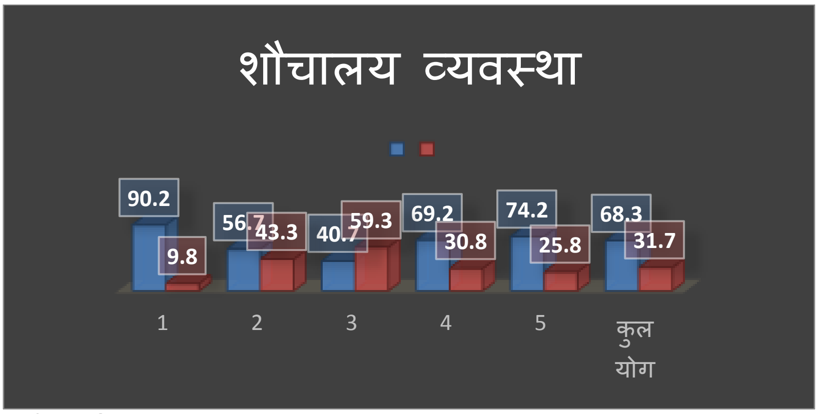

शौचालय की व्यवस्था नहीं में जिनका कुल जनसंख्या का 31.7% है। जोन नंबर 3 में सर्वाधिक 59.3% है, जबकि सबसे कम मात्र 9.8% जोन नंबर 1 में शौचालय की व्यवस्था नहीं है। जैसा कि हम सभी जानते है की जिस प्रकार से रोग का मुख्य कारण साफ सफाई का अभाव होता है। अगर कोई व्यक्ति साफ सफाई का बिलकुल भी ध्यान न रखे तो वह ज्यादा समय तक रोग से दूर नही रह पाएगा।

नैरोबी की मलिन बस्ती में 75 परिवार एक शौचालय साझा करते हैं, केवल 15% घरों में निजी शौचालय की सुविधा है, और एक सार्वजनिक शौचालय की औसत दूरी 52 मीटर से अधिक है। निजी शौचालय के बिना 83 प्रतिशत परिवार खराब स्वास्थ्य की रिपोर्ट करते हैं। (Corburn and Hildebrand, 2015)

शौचालय का प्रकार :- शौचालय कई प्रकार के होते है जैसे :- घर के अंदर (सेप्टिक टैंक, ड्राई पिट (गड्ढे वाला) और अन्य), घर के बाहर (सामुदायिक, सुलभ) और खुले में शौच के स्थान (रेलवे लाइन के किनारे, सड़क के किनारे, नदी,नाले,तालाब के किनारे और खुले मैदान में) शौचालय उपलब्ध है।

शौचालय का प्रकार			
I घर के अंदर	1 सेप्टिक टैंक	2.Dry pit सुखा (गड्ढे वाला) 3. अन्य	
II घर के बाहर	1 सामुदायिक शौचालय	2. सुलभ शौचालय 3. अन्य	
III खुले में शौच के स्थान	1.रेलवे लाइन के किनारे	2. सड़क के किनारे	3. नदी,नाले,तालाब के किनारे 4.खुले मैदान में

शौचालय घर के बाहर में सामुदायिक और सुलभ का उपयोग भी किया जा रहा है। भोपाल नगर के झुग्गी वासी अधिकतर बहुत ही निम्न आय वाले है और सभी को 'स्वच्छ भारत मिशन' के तहत पेसे नही मिल पाए अतः इसलिए सभी के घरों में शौचालय की व्यवस्था नही हो पाई है। जिस कारण से लोग सुलभ या सामुदायिक शौचालय का उपयोग करते है। कंपाला की तीन मलिन बस्तियों में एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन किया गया। घरेलू उत्तरदाताओं से आंकडें एकत्र किए गए जो मुख्य रूप से साझा शौचालयों का उपयोग कर रहे थे। जिनमें साफ सफाई का अभाव पाया गया अतः झुग्गीवासी बिमारियों के शिकार हुए है। (Tumwebaze and Mosler, 2014)

भारत सरकार के पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के स्वच्छ भारत मिशन की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार 2 अक्तूबर 2014 से लेकर अब तक देश में लगभग **10,07,62,869** (10 करोड़ से ज़्यादा) टॉयलेट बनाये गए है। जिसके आधार पर भारत को 100 प्रतिशत 'ओडीएफ़' घोषित किया गया है। ओडीएफ़ यानी एक ऐसा देश जहाँ हर घर में शौचालय हैं और लोग खुले में शौच नहीं कर रहे है। झुग्गी बस्तियों में देखा गया है कि शौचालय की व्यवस्था या तो है ही नही या है तो बहुत ही खराब है, जिन झुग्गी वासियों के यहाँ शौचालय की व्यवस्था उपलब्ध है।

जोन अनुसार प्रतिदर्श परिवार के शौचालय स्थिति का विवरण

जोन नंबर	घर के अंदर		घर के बाहर		खुले में		कुल योग
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1	35	85.4	6	14.6	0	0.0	41
2	17	56.7	13	43.3	0	0.0	30
3	11	40.7	10	37	6	22.3	27
4	9	69.2	2	15.4	2	15.4	13

5	23	74.2	8	25.8	0	0.0	31
कुल योग	95	66.9	39	27.4	8	5.7	142(100%)
स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित 2022							

उक्त तालिका में जोन अनुसार प्रतिदर्श परिवार के शौचालय में घर के अंदर, घर के बाहर और खुले में की स्थिति का विवरण दर्शाया गया है। प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं के पास शौचालय की घर के अंदर जिनकी संख्या 95 है, शौचालय की घर के बाहर की संख्या 39 है और खुले में शौचालय की संख्या मात्र 8 ही है।

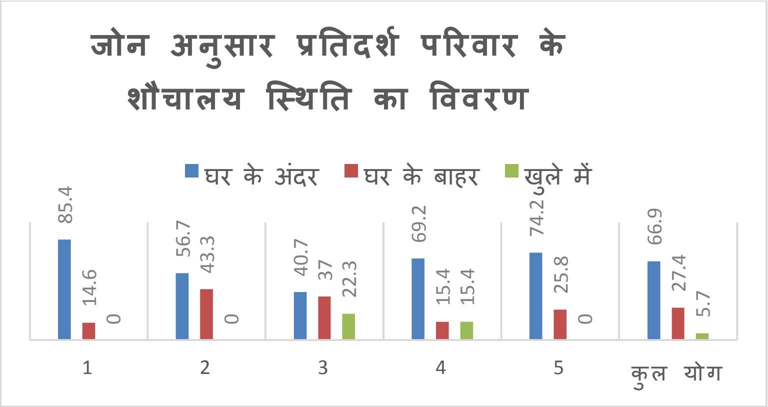

जिनका कुल जनसंख्या में शौचालय घर के अंदर, का 66.9% है, शौचालय की घर के बाहर का 27.4% है और खुले में शौचालय का 5.7% है। जोन नंबर 1 में सर्वाधिक 85.4% के पास शौचालय घर के अंदर है, और सबसे कम मात्र 40.7% जोन नंबर 3 में है। खुले में शौच पूर्णतः समाप्त या मुक्त देश घोषित हो चुका है, परन्तु आज भी सच कुछ और ही सामने नज़र आ रहा है। अभी भी उक्त आंकड़ों से स्पष्ट हो रहा है, कि जोन नम्बर 3 और 4 में क्रमशः 22.3 एवं 15.4 प्रतिशत उत्तरदाता खुले में ही शौच क्रिया करते है, जोकि बहुत ही बुरा है।

शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। कोई भी समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

प्लेटो :- "यदि कोई व्यक्ति शिक्षा की उपेक्षा करता है, तो वह अपने जीवन के अंत तक लंगड़ाकर चलता है।"

शिक्षा के अनुसार प्रतिदर्श परिवारों में घर के अन्दर शौचालय का विवरण					
शिक्षा					
शिक्षित		अशिक्षित		कुल योग	
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
72	75.7	23	24.3	95	100
स्रोत: व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित 2022					

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि अधिकतर शौचालय घर के अन्दर उन्ही उत्तरदाताओ के यहाँ उपलब्ध है। जोकि शिक्षित है यह बात बिलकुल सच है की मानव के जीवन स्तर को अच्छा बनाने में सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा ही है। जो मनुष्य शिक्षित हो जाता है, वह अपने लिए और अपने परिवार के लिए समस्त सुख सुविधाएँ उपलब्ध करने की हर संभव कोशिश में लगा रहता है। हालाँकि ऐसा नही है कि जो शिक्षित नही वे कोशिश नहीं करते वे भी करते है, परन्तु उनका प्रतिशत कम देखा गया है।

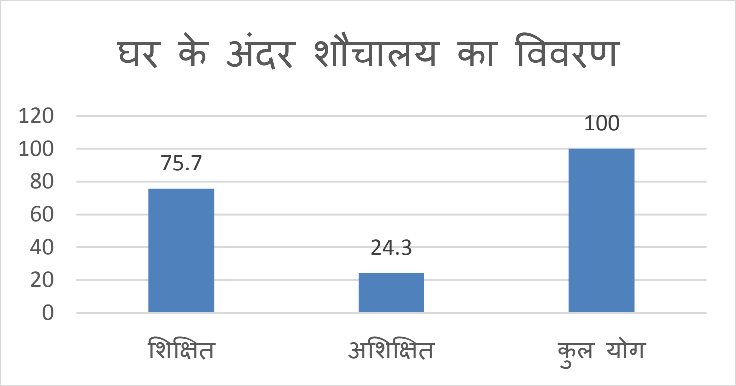

75.7 प्रतिशत वे उत्तरदाता है जो शिक्षित है और जिनके घर में अन्दर शौचालय की व्यवस्था है और मात्र 24.3 प्रतिशत वे लोग भी है जो अशिक्षित है परन्तु उनके घर में भी अन्दर ही शौचालय सुविधा उपलब्ध है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :-

निष्कर्ष में हम यह कह सकते हैं की भोपाल नगर की झुग्गी बस्तियाँ शौचालय की स्थिति की उचित व्यवस्था नहीं है। भोपाल की झुग्गी बस्तियों में जिस प्रकार से शिक्षा में अंतर है उसी प्रकार से अलग से शौचालय की व्यवस्था और शौचालय के प्रकारों में भी अंतर देखने को मिला है मात्र 68.3% उत्तर दाताओं के पास ही अलग से शौचालय की व्यवस्था है जबकि 31.7% उत्तर दाताओं की यहां शौचालय की कोई व्यवस्था नहीं है

झुग्गी बस्तियों में 'स्वच्छ भारत मिशन' योजना के तहत कई उत्तर दाताओं के पास शौचालय की व्यवस्था देखने को मिली हैं कुल 142 उत्तर दाताओं में से सर्वाधिक 78 के द्वारा शौचालय का उपयोग किया जा रहा है अतः अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि शिक्षा स्तर का शौचालय की स्थिति और शौचालय के प्रकार में घनिष्ठ संबंध हैं। शिक्षित लोग घर के अंदर शौचालय का उपयोग अधिक कर रहे हैं जबकि अशिक्षित लोग बहुत ही कम घर के अंदर शौचालय का उपयोग रहे हैं। भोपाल नगर की बढ़ती झुग्गी बस्तियां जागरूकता की कमी, अज्ञानता, शिक्षा से वंचित और समाज से दूरी के कारण यह कई सारी योजनाओं से लाभ ही नहीं ले पाते हैं। इनके निदान के लिए सरकार को इन्हें शिक्षित करके, इनके आवास की व्यवस्था में सुधार करके इन्हें समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए कुछ दृढ कदम उठाने चाहिए। इन्हें कुछ मूलभूत सुविधाएँ भी मुफ्त में या कुछ रियायत के दाम में ही प्रदान की जानी चाहिए।

देश में आज भी झुग्गी बस्तियों में ऐसे लोग रहते है जो सच में किसी नरक से कम नही है। वहां रहना तो दूर वहां से गुजरना भी बहुत ही मुश्किल कार्य जैसा प्रतीत होता है। जिन झुग्गी बस्तियों में साफ सफाई की अति आवश्यकता है और इन लोगों खुद सफाई के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1) Corburn, J. and Hildebrand, C., 2015. Slum sanitation and the social determinants of women’s health in Nairobi, Kenya. Journal of environmental and public health, 2015.
2) Tomlinson, R., 2015. Scalable community-led slum upgrading: The Indian Alliance and community toilet blocks in Pune and Mumbai. Habitat International, 50, pp.160-168.
3) Tumwebaze, I.K. and Mosler, H.J., 2014. Shared toilet users’ collective cleaning and determinant factors in Kampala slums, Uganda. BMC public health, 14, pp.1-10.
4) गंदी बस्तियों की समस्याएं, दुबे संजय 2007, विकास प्रकाशन, नई दिल्ली
5) डॉ एस. डी. मौर्य, अधिवास भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
6) डॉ विजय कुमार वर्मा, भारत में मलिन बस्तियों के दुष्प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन 2014 जनरल ऑफ एडवांस एंड स्कॉलरलीइरिसर्चस इन एलाइड एजुकेशन
7) डॉ सुरेश चंद्र बंसल, नगरीय भूगोल, मीनाक्षी पब्लिकेशन, मेरठ
8) भारत में गंदी बस्तियां एवं विकास श्रीवास्तव नीरज 1994, जीवन पब्लिकेशन, आगरा
9) भारतीय जनगणना 2011